प्रश्नः

''यदि परमेश्वर अनुग्रहकारी है, तो ज़्या भले, ईमानदार व साफ़ मन वाले लोगों का नाश हो सकता है?''

उज़रः

हमारा मानना है कि बाइबल सिखाती है कि उद्धार पाने से पहले पापों की क्षमा के लिए जल में डूबना आवश्यक है। इस विचार पर लोग आम तौर पर यह प्रतिक्रिया देते हैं कि ''हां, लगता है कि बाइबल की यही शिक्षा है, लेकिन दूसरे सज़ी धार्मिक लोगों का ज़्या होगा जिन्होंने बपतिस्मा नहीं लिया है? वे भी तो भले, ईमानदार और साफ मन वाले लोग हैं? उनका नाश कैसे हो सकता है?'' पहली बात, हम केवल उन लोगों की बात कर रहे हैं जो मसीह में विश्वास करते हैं, ज़ले, ईमानदार और साफ मन के धार्मिक हैं, लेकिन पवित्र शास्त्र की शिक्षा के अनुसार उनका बपतिस्मा नहीं हुआ है। ज़्या इन लोगों का नाश हो सकता है?

उनका ज़्या होगा जो परमेश्वर में विश्वास तो रखते हैं, परन्तु यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र नहीं मानते? यहूदियों या अन्यों का ज़्या होगा जो परमेश्वर को तो मानते हैं, परन्तु मसीह को उसके पुत्र के रूप में अर्थात परमेश्वर का अन्तिम प्रकाशन नहीं मानते? अपने आप को मसीही कहलाने वाले बहुत से लोगों की तरह वे भी तो भले, ईमानदार और साफ मन के हैं। ज़्या उनका नाश हो सकता है?

बाइबल की शिक्षा ज़्या है?

आइए यह पूछते हुए आरज़्ज़ करते हैं कि बाइबल की ज़्या शिक्षा है? हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि परमेश्वर ज़्या कहता है न कि यह कि लोगों का ज़्या मानना है। परमेश्वर की इच्छा को जानने का एकमात्र ढंग उसकी पुस्तक अर्थात बाइबल का अध्ययन करना है। तो फिर ज़्या बाइबल की शिक्षा के अनुसार इन लोगों का नाश हो सकता है?

इस प्रश्न का उज़र देने के लिए, आइए यह प्रश्न पूछते हैं:

नास्तिकों के लिए, पूछते हैं, ''*ज़्या परमेश्वर में विश्वास किए बिना किसी का उद्धार हो सकता है?*''ध्यान दें कि 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 कहता है कि उन लोगों से जो ''परमेश्वर को नहीं जानते'' बदला लेने के लिए मसीह धधकती हुई आग में आएगा। इब्रानियों 11:6 कहता है कि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया जा सकता, ज़्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले के लिए पहले यह विश्वास करना आवश्यक है कि ''वह है।'' ज़्या इससे ऐसा लगता है कि किसी नास्तिक का उद्धार हो सकता है? एक नास्तिक का कहना था कि यदि वह गलत हुआ तो वह मृत्यु के बाद न्याय के समय परमेश्वर के सामने जाने पर, उससे क्षमा मांग लेगा और इस जोक पर वह और परमेश्वर खूब हंसेंगे। लेकिन, बाइबल की शिक्षा के अनुसार, ऐसा नहीं होगा!

दूसरा, आइए निष्कपट मन वाले गैर मसीहियों से पूछते हैं: ''*ज़्या मसीह में विश्वास किए बिना उद्धार पाया जा सकता है?*''बाइबल ज़्या सिखाती है? यूहन्ना 8:24 के अनुसार, यीशु ने कहा, ''... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।'' यूहन्ना 14:6 में उसने कहा, ''... बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' मसीह के अलावा कोई दूसरा नाम नहीं है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सके (प्रेरितों 4:12)। हम गैर मसीही व्यज़्ति को पसन्द करते हैं और उसकी सराहना करते हैं, परन्तु बाइबल की बात को मानकर हम यह नहीं सोच सकते कि अविश्वासी रहकर उसका उद्धार हो जाएगा।

तीसरा, मसीही कहलाने वालों पर विचार करें जो धार्मिक तौर पर गलत हैं। हम उन मसीही लोगों की बात नहीं कर रहे जो कमजोर हैं और गलतियां करते हैं। हम उन लोगों की बात कर रहे हैं जो मसीही होने का दावा करते हैं परन्तु उन्होंने पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है। ज़्या उनका उद्धार होगा? आइए उनसे पूछते हैं, ''*ज़्या आज मसीह के सुसमाचार को माने बिना उद्धार पाया जा सकता है?*''किसी ऐसे व्यज़्ति की कल्पना करें जो साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य है। वह अपने विश्वास में भला, ईमानदार और शुद्ध मन है, परन्तु उसने बाइबल के अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है। ज़्या वह सुसमाचार की इस आज्ञा को माने बिना उद्धार पा सकता है? 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 में पौलुस ने न केवल यह कहा कि मसीह उन लोगों से जो ''परमेश्वर को नहीं जानते'' बदला लेगा, बल्कि उसने यह भी कहा कि वह उन लोगों से भी बदला लेगा जो ''सुसमाचार को नहीं मानते।'' यीशु के सुसमाचार को माने बिना उद्धार नहीं पाया जा सकता (तु. मज़ी 7:21-23)। यदि कोई यह कहकर आपज़ि करता है कि यह तो बहुत गलत है तो हमारा जवाब होगा कि नियम तो

परमेश्वर ने बनाए हैं, हमने नहीं! हमें डर है कि उसके नियमों को न मानने का फैसला करना किसी के लिए भी सुरक्षित नहीं है।

फिर तो इसका अर्थ यह हुआ कि भले, ईमानदार और निष्कपट मन वाले लोग नाश हो सकते हैं? इस पर विचार करें: कुरनेलियुस एक भला मनुष्य था (प्रेरितों 10:1-4), परन्तु हम जानते हैं कि वह खोया हुआ था ज़्योंकि उसके लिए उन बातों को सुनना आवश्यक था जिनसे उसका उद्धार हो सकता था (प्रेरितों 11:14, 15)। खोजा एक धार्मिक मनुष्य था, परन्तु उसे उद्धार की इतनी अधिक आवश्यकता थी, कि परमेश्वर ने उसे वचन सुनाने के लिए फिलिप्पुस को उसके पास भेजा (प्रेरितों 8)। शाऊल भला और ईमानदार आदमी था, परन्तु वह मसीही बनने से पहले अपने आप को सबसे बड़ा पापी मानता था (1 तीमुथियुस 1:15)। आप नैतिक तौर पर भले ही परमेश्वर के निकट हो सकते हैं, परन्तु आत्मिक तौर पर आप परमेश्वर से अलग हैं; निष्कपट, परन्तु निष्कपटता से गुमराह; ईमानदार, परन्तु ईमानदार से हम सब ने इसके उदाहरण देखे हैं। जैसा कि ऑस्ट्रेलिया में एक नर्स पर अस्पताल में चार बच्चों की हत्या करने का आरोप लगा। उस पर यह आरोप था कि उसने उन्हें चीनी की जगह नमक दे दिया था। उसके विरुद्ध लगे आरोप सिद्ध नहीं हो सके और मामला रफा-दफा हो गया। परन्तु चीनी की जगह नमक तो किसी न किसी ने अवश्य मिलाया था। सज़्भवत: जिसने भी ऐसा किया उसने जानबूझकर यह गलती नहीं की थी, परन्तु इससे चार बच्चे तो मारे गए थे।

ऐसे ही एक मामले में रेजिना, कैनेडा में किसी नर्स द्वारा बच्चों के लिए डिस्टिल्ड वाटर की जगह बोरिक एसिड का घोल पिलाने से पांच बच्चों की मौत हो गई थी। ईमानदारी से की गई यह गलती त्रासदी बन गई थी।

एक यात्री गाड़ी न्यूयॉर्क में प्रवेश कर रही थी तब एक अन्य गाड़ी ने उसे टज़्कर मार दी जिससे पचास लोगों की जान चली गई। लहू बहते और गालों पे आंसू टपकते हुए उसका इंजीनियर इंजन के नीचे दब गया था। पीड़ा से कराहते हुए उसने एक कागज़ दिया। ''यह लो'' कहकर उसने बताया। ''इससे आपको पता चल जाएगा कि किसी ने मुझे गलत आदेश दिए थे!'' बेशक हम निष्कपट मन से किसी के गलत आदेशों को मान लें, पर उससे हमें पीड़ा झेलनी पड़ सकती है। हमारे साथ दूसरों को भी।[1]

लेकिन, यदि भले, ईमानदार और निष्कपट लोगों का नाश हो सकता है, तो इससे एक और प्रश्न उठता है।

यह कैसे हो सकता है कि उनका नाश हो जाए?

यदि परमेश्वर अनुग्रह करने वाला है, तो यह कैसे हो सकता है कि ऐसे लोगों का नाश हो जाए?

इस प्रश्न पर चर्चा आरज़्भ करते हुए, हमें यह कहना चाहिए: *यदि बाइबल किसी भी तरह से सत्य है, तो फिर खोए और उद्धार पाए हुओं के बीच एक विभाजक रेखा खींचनी आवश्यक है ज़्योंकि कुछ लोगों का नाश तो होगा।* यहां पर, हमें अपने दिमाग से सोचना

चाहिए न कि दिल से। बाइबल सिखाती है कि कुछ लोगों का नाश होगा। ज़्योंकि उनका नाश इसलिए होगा कि बाइबल पर विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के सामने यह समस्या है कि परमेश्वर इन लोगों को दण्ड ज़्यों देगा? और कोई भी आपज़ि जो इस बात पर कि भले, ईमानदार और निष्कपट मन वाले मसीही कहलाने वाले लोगों का नाश केवल इसलिए हो सकता है कि उन्होंने पूरी तरह से सुसमाचार को नहीं माना। यह कहना कि मसीही कहलाने वाले भले, ईमानदार और निष्कपट लोगों का सुसमाचार की आज्ञा पूरी तरह से न मानने के कारण नाश होगा उतना ही सत्य है जितना किसी और के नाश होने की बात।

नाश होने वालों और उद्धार पाए हुओं को अलग-अलग दिखाने के लिए उनके बीच एक विभाजक रेखा खींचने की कल्पना करते हैं। यह रेखा इस तरह से बनाते हैं कि ''बपतिस्मा न पाए हुए विश्वासी'' ''नाश होने वाले'' की ओर हैं। कोई कहता है, ''आप ऐसा नहीं कर सकते।'' ज़्यों नहीं? ''ज़्योंकि बपतिस्मा न पाए हुए वे विश्वासी भले, ईमानदार और निष्कपट लोग हैं और परमेश्वर भले, ईमानदार और निष्कपट मन वाले लोगों को दण्ड नहीं देगा।'' फिर हम यह रेखा ''बपतिस्मा न पाए हुए विश्वासी'' से ''उद्धार पाए हुए'' लोगों की ओर बनाते हैं, लेकिन ''गैर मसीही'' लोग ''नाश होने वाले'' की ओर हैं। कोई दूसरा आपज़ि करता है ''नहीं, यह सही नहीं है।'' ज़्यों नहीं? ''ज़्योंकि वे लोग तो भले, ईमानदार और निष्कपट हैं और परमेश्वर निश्चित रूप से उन लोगों को दण्ड नहीं देगा जो उस पर विश्वास करते हों, परन्तु उन्होंने केवल मसीह पर विश्वास न किया हो।'' फिर हम रेखा को आगे बढ़ाएंगे जिससे ''गैर मसीही'' ''उद्धार पाए हुए'' की ओर हों, परन्तु ''नास्तिक'' खोए हुओं की ओर। कोई ज़ोर देकर कहता है, ''रुको, तुम यह रेखा वहां नहीं खींच सकते।'' ज़्यों नहीं? ''ज़्योंकि कुछ नास्तिक तो मसीही लोगों की तरह ही अच्छे हैं। स्वर्ग में जाने के लिए निष्कपट और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला होना चाहिए। और परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को दण्ड नहीं देगा जो ऐसा करता है, पर केवल उसमें विश्वास न करता हो। निस्संदेह परमेश्वर भले, ईमानदार और निष्कपट लोगों को दण्ड नहीं देगा।'' इसलिए, हमें फिर से रेखा बनाकर नास्तिकों को भी ''उद्धार पाए हुए'' की ओर मिलाना चाहिए।

अन्त में यहां पर हम कुछ सहमति पा सकते हैं, ज़्योंकि जो लोग अब ''नाश होने वाले'' हैं वे भले, ईमानदार और निष्कपट नहीं हैं और हमसे बहुत से लोग यह कहने को तैयार हैं, ''हां परमेश्वर उन अविश्वासियों को जो भले, ईमानदार और निष्कपट *नहीं* हैं दण्ड दे सकता है।''

इससे पहले कि हम इन दुष्ट, बेईमान और कपटी मन वाले लोगों को दण्ड देने की रेखा से आगे निकलें, हमें फिर आपज़ियां सुनाई दे रही हैं: कोई कहता है ''यह तो ठीक है कि वे अच्छे लोग नहीं हैं, लेकिन अच्छे न होने का कारण भी तो पूछ लो?'' मनोचिकित्सक उज़र देता है, ''वे मानसिक या शारीरिक रूप से बीमार लोग हैं।'' शिक्षक कहता है, ''उन्हें पूरी शिक्षा नहीं मिल पाई।'' समाज शास्त्री कहता है, ''उनके साथ सामाजिक न्याय नहीं हुआ।'' मनोवैज्ञानिक कहता है, ''उन्हें जैसा माहौल मिला था वैसे ही वे बन गए। आप उन पर दोष नहीं

लगा सकते।'' कैल्विनवादी शिक्षा को मानने वाला कहता है, ''उन्हें नरक का दण्ड मिलना पहले से तय था।'' कलीसिया का सदस्य कहता है, ''उन्हें संडे स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला था इसलिए उन्हें अच्छी तरह पता नहीं चला।'' इन बातों में कुछ वास्तविकता है। इसलिए हमारे सामने फिर यही प्रश्न है कि ''जब उनकी गलती ही नहीं है तो परमेश्वर उन लोगों को जो भले, ईमानदार और निष्कपट मन के हैं, दण्ड कैसे दे सकता है?''

यहां पर, हम अपनी रेखा को छोड़ने के लिए तैयार हैं! पर छोड़ नहीं सकते! यदि छोड़ते हैं, तो कम से कम बाइबल को भी छोड़ना पड़ेगा ज़्योंकि यह बताती है कि कुछ लोगों का नाश होगा!

तो फिर हम इस रेखा को कहां ले जाएं? बात तो यह है कि यह कहीं न कहीं अवश्य जाएगी! *हम इस रेखा को कहीं भी ले जाएं इसकी एक ओर वे लोग आएंगे ही जो भले, ईमानदार और निष्कपट हैं या जिनके बारे में, हम सोचते हैं कि उन्हें ऐसे न होने के कारण क्षमा कर देना चाहिए!*

अन्य शब्दों में, हम जो यह सिखाते हैं कि बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक है। भले, ईमानदार और शुद्ध मन न रखने वाले और अलग शिक्षा को मानने वालों के नाश की समस्या केवल हमारी समस्या नहीं होगी। मेरे पास ''केवल एक सच्चा धर्म'' पर एक प्रोटेस्टेंट लेखक का लेख है। सचमुच मसीही कहलाने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इस बात से सहमत होना आवश्यक है कि बाइबल के अनुसार मसीहियत ही एक सच्चा धर्म *है!* व्यापक अर्थ में माना जाता है कि संसार के 30 प्रतिशत लोग मसीही हैं। लेकिन इसका अर्थ यह हुआ कि संसार के बाकी अर्थात 70 प्रतिशत लोग खोए हुए हैं! हम उन लोगों के बारे में ज़्या मानें जो भले, ईमानदार और शुद्ध मन वाले हैं परन्तु इस ''एक सच्चे धर्म'' का भाग नहीं हैं?

हमने दिखाया है कि भले, ईमानदार और निष्कपट मन वाले लोगों के खोए होने की समस्या विश्वव्यापी है जिसका सामना मसीही या बाइबल पर विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए करना आवश्यक है। लेकिन अभी तक हमने इस प्रश्न का उज़र नहीं दिया कि परमेश्वर इन लोगों को दण्ड ज़्यों देगा?

इस प्रश्न का उज़र बाइबल के इन तीन महान तथ्यों में मिलता है: पहला, सब ने पाप किया (रोमियों 3:23)। दूसरा, पापियों को मृत्यु मिलनी आवश्यक है। रोमियों 6:23 कहता है, ''ज़्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है ...।'' ''मज़दूरी'' शब्द यह संकेत देता है कि पाप से मिलने वाला वेतन मृत्यु है ज़्योंकि आप इसके योग्य हैं। आपने पाप किया है और पाप के कारण आपका मरना आवश्यक है। तीसरा, मनुष्य अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता। पाप में रहते हुए, हम आशाहीन हैं और मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं। हम नि:सहाय भी हैं ज़्योंकि हम अपने पाप से अपने आप को ऊपर नहीं उठा सकते। इसलिए हम चाहे कुछ भी हों, कुछ भी कर लें, वह हमें हमारे पापों से छुड़ाने के लिए काफ़ी नहीं है।

बहुत से लोगों की समस्या यह है कि उनका विश्वास है कि उनकी भलाई, ईमानदारी और निष्कपटता किसी न किसी प्रकार उनके पाप को ढांप ही देगी। वे जानते हैं कि उन्होंने पाप किया है। परन्तु उन्हें लगता है कि यदि वे भले, ईमानदार और इतने निष्कपट हों तो

उनके पाप क्षमा किए जाएंगे और वे परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरेंगे। *पर बाइबल ऐसा नहीं सिखाती!* यह सिखाती है कि संसार में पाई जाने वाली सारी भलाई, ईमानदारी और निष्कपटता किसी के पाप को नहीं मिटा सकेगी!

''भले, ईमानदार और निष्पकट लोगों का नाश कैसे हो सकता है?'' और ''परमेश्वर ऐसे लोगों को दण्ड ज़्यों देगा?'' हमारे इन प्रश्नों का उज़र मिल गया है। ऐसा इसलिए नहीं कि परमेश्वर दण्ड देना चाहता है ज़्योंकि परमेश्वर तो प्रेम है और चाहता है कि सब लोग उद्धार पाएं। बल्कि इसलिए है कि उन्होंने पाप किया अर्थात परमेश्वर के प्रति विद्रोह किया है। और अपने पापों को मिटाने के लिए उन्होंने परमेश्वर के सामने जो कुछ भी किया है वह उनकी अपनी भलाई है जो कि उद्धार के लिए काफ़ी नहीं है।

तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?

तो फिर किसका उद्धार हो सकता है? यदि उद्धार को पज़्का करने के लिए भलाई, ईमानदारी और निष्कपटता काफ़ी नहीं हैं अर्थात यदि भले, ईमानदार और निष्कपट लोगों का नाश हो सकता है तो फिर उद्धार किसका होगा? इसका उज़र बहुत ही आसान है: अब और अनन्तकाल के लिए केवल उन्हीं लोगों का उद्धार हो सकता है जो अपनी भलाई, ईमानदारी और निष्कपटता पर नहीं बल्कि मसीह के लहू पर भरोसा रखते हैं अर्थात जो लहू के द्वारा उद्धार पाए हुए हैं!

विचार करें कि लहू *ज़्या* करता है: यह *विवेक को शुद्ध करता है:* ''तो मसीह का लोहू ... तुज़्हारे विवेक को मरे हुए कामों से ज़्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो'' (इब्रानियों 9:14)। लहू *मनुष्य के पाप क्षमा करता है।* यीशु ने कहा, ''ज़्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमिज़ बहाया जाता है'' (मज़ी 26:28)। यह *पापों को धो डालता है।* प्रकाशितवाज़्य 1:5 कहता है, ''... जो [अर्थात मसीह] हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।''

निश्चय ही उसका लहू हमारा उद्धार करता है। यह उस पाप को धो डालता है जो हमें दोषी ठहराता, मारता और परमेश्वर से अलग करता है। पर यह ऐसा करता कैसे है? लहू के द्वारा क्षमा पाने के लिए हमारे लिए ज़्या करना ज़रूरी है?

यह लहू *बपतिस्मे के समय* हमारे विवेक को शुद्ध करता है। पहला पतरस 3:20, 21 कहता है:

> ... जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुज़्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।

बपतिस्मे के समय लहू क्षमा भी करता है। प्रेरितों 2:38 में, विश्वास करने वाले यहूदियों से कहा गया था, ''... मन फिराओ, और तुम में से हर एक *अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए* यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' और यह लहू *बपतिस्मे के समय* पाप को धो डालता है। प्रेरितों 22:16 में, पश्चाज़ापी शाऊल से कहा गया था, ''अब ज़्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल।'' यदि उसके लहू बहाने के द्वारा उद्धार पाने के बारे में हमारा कोई प्रश्न हो तो उसका उज़र रोमियों 6:3, 4 में दिया जाएगा, ''ज़्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का [में] बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का [में] बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।'' जब बाइबल कहती है कि हमें मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा मिलता है, तो इससे बपतिस्मे के महत्व पर किसी भी प्रकार का संदेह खत्म हो जाता है ज़्योंकि यह हमेशा के लिए इसे उसके लहू से जोड़ देता है। इस कारण भलाई, ईमानदारी और निष्कपटता आपका उद्धार नहीं करेगी, ज़्योंकि उद्धार केवल मसीह के लहू से ही हो सकता है! पर लहू के द्वारा उद्धार पाने के लिए, आपके लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है!

उद्धार के विषय में हम यकीन से कैसे कह सकते हैं?

उद्धार के विषय में हम यकीन से कैसे कह सकते हैं? परमेश्वर दूसरों के साथ चाहे कैसा भी व्यवहार करे, परन्तु *हम में से हर कोई* पूरी तरह से *आश्वस्त* कैसे हो सकता है कि हमारा उद्धार हो गया है? उज़र स्पष्ट है:

पहले, *ज़्या हमने परमेश्वर का वचन सुना है?* ''सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। दूसरा, *ज़्या हमने यीशु को परमेश्वर का पुत्र माना है?* ''... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)। तीसरा, *ज़्या हमने अपने पापों से मन फिराया है?* ''...यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे'' (लूका 13:3)। चौथा, *ज़्या हमने मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार किया है?* ''ज़्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है'' (रोमियों 10:10)। पांचवां, *ज़्या हमने पापों की क्षमा के लिए पवित्र शास्त्र की शिक्षा के अनुसार बपतिस्मा लिया है?* ''... मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

केवल नये नियम के मसीही बन जाएं। यदि आप उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो आप जान सकते हैं कि आप सदा के लिए परमेश्वर के साथ स्वर्ग में होंगे। फिर, वह दूसरों के साथ कुछ भी करे, पर आप निश्चय से कह पाएंगे कि *आप* परमेश्वर के दाहिनी ओर की रेखा में हैं!

सारांश

आइए एक अंतिम प्रश्न पूछते हैं: *ज़्या आप सचमुच भले, ईमानदार और निष्कपट हैं?*

यदि आपने पूरी तरह से प्रभु की आज्ञाओं को नहीं माना है तो ज़्या आप सचमुच ''भले'' हैं?

यदि आप सच्चाई को देखकर उसकी आज्ञा नहीं मानते, तो ज़्या आप सचमुच ''ईमानदार'' हैं? हो सकता है कि आप कहें, ''पर किसी और ने तो यह नहीं देखा और उसने कोई आज्ञा नहीं मानी।'' शायद नहीं, पर हो सकता है कि जो अवसर आप को मिला है, उसे न मिल पाया हो। फिर तो वह ईमानदारी से कह सकता है कि, ''मुझे अच्छी तरह पता नहीं था।'' पर ज़्या *आप* यह कह सकते हैं, जबकि आप ने अच्छी तरह से जान लिया, और आपको अच्छी तरह से पता चल गया है? ज़्या उस सच्चाई के आधार पर जो आप को पता है काम करने से इन्कार करना बेईमानी नहीं है?

यदि आप बाइबल को नज़रअन्दाज करने की ठानकर ऐसे आगे बढ़ते हैं जैसे आपने सच्चाई को कभी सुना ही न हो, तो ज़्या आप सचमुच ''निष्कपट'' हैं? उस मामले में, ज़्या आप सचमुच परमेश्वर की इच्छा को जानने और उसकी इच्छा को मानने के लिए गंभीर हैं?

कई और भले, ईमानदार और निष्कपट हों या न, पर ज़्या *आप* हैं?

पाद टिप्पणी

[1] ''सिलेक्टड एण्ड अडेप्टड'' शीर्षक से और सिलोम स्प्रिंग्स, आरकैंसा के चर्च बुलेटिन में मुद्रित लेख से लिया गया।